राग- बिलासखानी तोड़ी और - भैरवी की तुलना

समता :-

1) बिलासखानी तोड़ी और भैरवी दोनों ही भैरवी थाट के राग माने जाते हैं।

2) दोनों में रे, ग, ध और नि स्वर कोमल प्रयोग किये जाते हैं,

3) दोनों ही प्रात: कालीन राग है।

4) दोनों का अवरोह सम्पूर्ण है।

विभिन्नता :-

1) बिलासखानी तोड़ी के आरोह में मध्यम वर्ज्य और निषाद अल्प है, किन्तु भैरवी में सातों स्वर प्रयोग किये जाते हैं,

2) भैरवी राग में म - सा और बिलासखानी में ध - ग क्रमश: वादी - संवादी है।

3) बिलासखानी तोड़ी गम्भीर प्रकृति का राग है और भैरवी चंचल प्रकृति का, इसलिये बिलासखानी में ख्याल और भैरवी में ठुमरी गाई जाती है।

Scanned with CamScanner

4) बिलासखानी में मन्द्र प्रधान है और भैरवी में मध्य और तार सप्तक प्रधान है।

5) मध्यम स्वर भैरवी में महत्वपूर्ण है और बिलासखानी में गौण है। बिलासखानी को भैरवी से बचाने के लिये मध्यम का प्रयोग कुशलता से करना पड़ता है।

6) भैरवी राग की रंजकता बढ़ाने के लिये अन्य स्वरों का प्रयोग करते हैं; किन्तु बिलासखानी में किसी विवादी स्वर का प्रयोग नहीं करते।

7) बिलासखानी तोड़ी की जाति के विषय में विद्वानों में मतभेद है किन्तु भैरवी की जाति के विषय में कोई मतभेद नहीं है।

Scanned with CamScanner